# मेरी पहली कक्षा

दीपा बिष्ट



मैं अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड में 6 फरवरी 2012 से कार्यरत हूँ। हमारा स्कूल 10 अप्रैल 2012 से आरम्भ हुआ। उससे एक महीना पहले हमने दिनेशपुर में घर जा-जाकर बच्चों की जानकारी ली। माता-पिता से मिले। कौन बच्चे स्कूल जाते हैं, किसने पढ़ाई छोड़ दी, किन परिस्थितियों में स्कूल जाना बन्द हुआ, क्या अब वह पढ़ाई पूरी करना चाहते हैं। इन सब बातों के बाद उनको बताया कि आपके दिनेशपुर में अज़ीम प्रेमजी स्कूल खुला है जिसमें स्कूल के संचालन, कार्यकारिणी,प्रणाली एवं मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। साथ ही यह भी बताया कि स्कूल खोलने का मक़सद केवल एक है "सबको शिक्षा मिले। इस बहुमूल्य नेमत से कोई बच्चा छूट न जाए।"

दिनेशपुर की भौगोलिक स्थिति को समझने पर इस बात की जानकारी हुई कि अधिकतर निवासी बांग्लादेश से पलायन कर के यहाँ पर बसे थे, जिसके कारण अधिकतर लोगों की भाषा बंगाली एवं पंजाबी थी। स्कूल के शुरुआती दिनों में बच्चों के रहन-सहन, सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति को जानने का प्रयास किया। उनके साथ बातचीत की एवं खेल के साथ उनको जोड़ने का प्रयास किया ताकि खेल के माध्यम से हम बच्चों की क्षमता के अनुरूप उनके पढ़ने-पढ़ाने में कुछ सहयोग कर सकें।

यह मेरे लिए नया-सा अनुभव था। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 स्थानीय भाषा को कक्षा में स्थान देने की बात कहती है। वहाँ पर हम अपने-आप को कहीं दूर खड़े देख रहे थे। अब बारी थी इन चुनौतियों से दूर जाने की या फिर इनसे आगे निकल जाने की। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए बच्चों को उनकी भाषा में विचार एवं बातचीत करने का अवसर दिया। कुछ ही समय में हमें बच्चों की भाषा कुछ समझ में आने लगी और बच्चों को हिन्दी बोलने में मज़ा आने लगा। लगने लगा कि अब सब ठीक है। बच्चे हमें और हम बच्चों को जानने का प्रयास बराबर करते रहे।

कक्षा पहली में 30 बच्चे थे। जिसमें रानी मण्डल (काल्पनिक नाम) नाम की एक बच्ची थी। उसका व्यवहार अन्य बच्चों से अलग था या यह कह सकते हैं कि वह सिर्फ़ अपनी धुन में रहती थी। किसी भी बच्चे को मार देना उसके लिए सामान्य-सी बात थी। कभी-कभी वह दाँत लगाकर बच्चों को काट

> "यह इकाई कई कक्षाओं की उस वास्तविकता के बारे में है जहाँ विद्यार्थियों की मातृभाषा और विद्यालय की भाषा समान नहीं होती है। ऐसी परिस्थितियों को अक्सर चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस इकाई का उद्देश्य बहु-भाषावाद के प्रति जागरूकता और सकारात्मक समझ को उजागर करना है, जिसके अन्तर्गत यह बात बताई गई है कि बहु-भाषावाद के माध्यम से भाषा कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाई जा सकती है।"
> - राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

लेती थी। उसके पास कोई भी बच्चा नहीं बैठता, न उससे बातचीत करता और न वह किसी के साथ खेलती। उसको कुछ भी कहो या उसके पास जाकर उससे कुछ बात करो तो वह घूरने लगती, हाथ-पैर मारती। कई बार उसने मुझ पर अपने दाँतों को आज़माने का सोचा परन्तु मेरी क़िस्मत ठीक थी। उसे कोई भी देख ले तो वह यही कहता कि उसका समाज में लालन-पालन न होकर कहीं और ही हुआ है।

उस समय हमारे विद्यालय में 12 शिक्षक थे और अरुणा वी.ज्योति जो एक सहकर्मी और गाइड थीं, वे समय-समय पर शिक्षण कार्य की चुनौतियों में हमारा मार्गदर्शन करतीं। विगत 21 साल से वह स्कूली शिक्षा में काम कर रही थीं। एक विद्यालय को सुचारू रूप से चलने के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता होती, उन सभी बिन्दुओं पर हम सब लोग मिलकर अपने विचार रखते। फिर एकमत होकर उस नियम पर कार्य करते। किसी भी जीवन्त चीज़ में वैचारिक मतभेद का होना आवश्यक होता है।

रानी के व्यवहार एवं अन्य साथियों के साथ उसके असहज बर्ताव के कारण सभी बच्चे उससे परेशान थे। वह मेरे लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में थी। उसके व्यवहार के बारे में अरुणा जी से चर्चा की। तब उन्होंने कहा कि दीपा यह तुम्हारे लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है और हम जानते हैं कि तुम इस बच्ची में बदलाव ले आओगी। पर, इस बच्ची के साथ तुम कैसे व्यवहार करोगी यह मेरे बताने की बात नहीं है। इसलिए इस विषय में मैं तुमको कुछ नहीं बताऊँगी। तुम इस बच्ची के साथ काम करो। पर, ध्यान रखना कि तुम्हारी आवाज़ कक्षा के बाहर नहीं आनी चाहिए। तुमको इससे तेज़ आवाज़ में बात

नहीं करनी है। कुछ समय बाद तुम खुद देखोगी कि इसके व्यवहार में बदलाव आ गया है।

कक्षा में सभी बच्चों को कहा कि जब तक रानी किसी से बात नहीं करना चाहे तब तक उससे कोई बात नहीं करेगा। कोई भी उसको परेशान नहीं करेगा। सभी बच्चे कविता-कहानी, खेलकूद करते। रानी दूर से सभी को देखती रहती। कभी कुछ नहीं बोलती। कुछ दिनों तक ऐसा चलता रहा। एक दिन सभी बच्चे खेल रहे थे और कुछ कविता कर रहे थे। उनकी कविता का हाव-भाव देखकर रानी जोर-जोर से हँसने लगी। उसकी हँसी देखकर मुझे ख़ुशी महसूस हुई। अब मैं रोज़ कुछ-न-कुछ ऐसी गतिविधि कराती जिसे देखकर वह ख़ुश होती।

एक दिन रानी स्वयं हमारे साथ गोले में खड़ी हो गई। सभी बच्चों के साथ मिलकर ताली बजाने लगी। उसके बाद मैंने उससे थोड़ी-थोड़ी बात करनी आरम्भ की और वह 'हाँ' या 'न' में या सर हिलाकर बात करने लगी। उसके बाद से मैं रानी को अपने पास बुलाकर या उसके पास बैठकर काम करती। कुछ दिनों में वह स्वयं ही मेरे पास आने लगी। अब बच्चों के साथ उसका व्यवहार थोड़ा बदलने लगा। वक़्त के साथ उसमें बदलाव आने लगा और अन्य बच्चों के साथ वह खेलने लगी।

एक दिन रानी के घर जाना हुआ। तब ज्ञात हुआ कि वह दो भाई-बहन हैं। माता-पिता इनके उठने से पहले ही अपने काम पर चले जाते हैं। उसका भाई डेढ़ साल का है। सवेरे वह झाड़ू लगाती, बर्तन धोती और अपने भाई को दिन भर सम्भालने का कार्य करती है। जब रानी स्कूल आ जाती तब पड़ोसी उसके भाई को डाँटते रहते। माँ रानी को ज़्यादा डाँटतीं। बात-बात पर उसकी पिटाई हो जाती। उसके माता-पिता कभी भी स्कूल में अभिभावक गोष्ठी में नहीं आए। एक दिन उसके माता-पिता मुझे बाजार में मिल गए। उनसे रानी के बारे में चर्चा हुई। उन्होंने मेरा धन्यवाद दिया और बताया कि घर पर अब वह अपने छोटे भाई को कविता और कहानी सुनाती है और कुछ न कुछ कला या चित्रकारी करती रहती है। मुझे ख़ुशी हुई। मैंने उनसे कहा कि अब आप भी अभिभावक गोष्ठी में आया करो, जिससे बच्चे अपनी तारीफ़ सुनकर आपके सम्मुख और बेहतर प्रयास करेंगे और उनको ख़ुशी मिलेगी।

कक्षा 3 में वह जब आई तब *चकमक* पत्रिका की तरफ से चित्रकारी की प्रतियोगिता हुई और उसको इनाम मिला। उसने मेरे पास आकर कहा कि, "मैडम देखो, मुझे क्या इनाम मिला। आप मेरी पहली टीचर हो इसलिए पहले आपको मैं यह इनाम दिखाने आई हूँ।" मेरे भीतर एक अजीब-सी अनुभूति हुई। ख़ुशी के मारे मेरी आँखें भर आईं। उस पल का वर्णन मैं कर नहीं सकती हूँ।

समय पंख लगाकर कब उड़ गया पता नहीं चला। अब वह सलवार-कुरता पहनकर, दो चोटी बाँधकर आती है। वह अब कक्षा 6 में आ गई है। जब कभी मैं कक्षा 1 के बच्चों के साथ कक्षा में होती हूँ तब रानी मेरे पास आ जाती है और कक्षा 1 के बच्चों का ख़्याल रखने में मेरा सहयोग करती है।

इन 5 सालों में मैंने बहुत कुछ सीखा जिसमें धीरज रखना सबसे महत्त्वपूर्ण है। अरुणा जी हर साल स्कूल में आती हैं और अब जब उनसे इस विषय में चर्चा हुई तो उन्होंने कहा कि कुछ चीज़ों का जवाब नहीं होता है। समय हमें रास्ता बता देता है। हमारा विवेक हमें समझकर प्रयास करने में मदद करता है।

**दीपा बिष्ट** फरवरी, 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उधमसिंह नगर में शिक्षिका हैं। 2004 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। वह अपने विद्यार्थियों से सीखने में दृढ़ता से विश्वास करती हैं। उनसे deepa.bisht@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।